Vol 5 Issue 9 Oct 2015

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850
Impact Factor : 3.1560(UIF)
Volume - 5 | Issue - 9 | Oct - 2015

खेल जगत में भारतीय महिलाओं की भागीदारीः सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य

First Author Details :

राकेश कुमार पाण्डेय
अतिथि क्रीड़ा अधिकारी, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बीना (सागर) मध्यप्रदेश।

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन् भारत में खेल जगत में महिलाओं की भागीदारी के सैद्धान्तिक पहलुओं का विश्लेषण करता है। शोध पत्र पूर्णतः द्वितीयक तथ्यों पर आधारित है। पत्र में वर्तमान परिवर्तित होते समाज में खेल जगत में महिलाओं की भागीदारी, उस पर समाज की प्रतिक्रिया तथा खेल जगत में महिलाओं हेतु रोजगार के अवसरों के विभिन्न आयामों को प्रस्तुत किया गया है। इस हेतु विभिन्न सूचना स्रोतों से संकलित तथ्यों का पत्र में उपयोग किया गया है।

मुख्य बिन्दुः महिलाओं की खेलों में भागीदारी, महिलाओं का खेल के प्रति रूझान, छात्राओं के विरूद्ध खेल में भेदभाव तथा असमानता.

प्रस्तावना

खेल एक स्वतः स्फूर्ति देयक प्रकृति जन्य प्रवृत्ति है, जो स्वस्थ मस्तिष्क एवं उर्जावान शरीर के निर्माण में सहायक है। शैशवस्था से ही मानव स्वाभाविक रूप से जाने, अनजाने में खेल की ओर आकर्षित होता है। खेल एक विशेष प्रकार की आनन्दानुभूति होती है जो अनुभवजन्य है तथा सहज ही बोधगम्य है। खिलाड़ी स्वस्थ मस्तिष्क एवं शरीर का स्वामी होता है, तथा उसके खेल से टीम भावना, प्रतिस्पर्धा, भाईचारा तथा अपनापन की भावना विकसित होती है, जो जाति, धर्म, रोग, लिंग एवं राष्ट्रीयता के संकुचित सारणियों से अलग है। खेल भावना के संचारित होने से मानव मन में जिस रोगात्मक तृप्ति का उदय होता है, वह समाज को मानसिक रूप से बाधने का कार्य करता है। किसी भी राष्ट्र एवं समाज का विकास उसके स्वस्थ नागरिकों के उपर निर्भर करता है, जिसके चलते खेल एवं व्यायाम मानव जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य का अवलोकन करने से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय महिलायें खेलों के क्षेत्र में विश्व को कड़ी चुनौती दे रही है। जिसका प्रमाण ओलंपिक, राष्ट्र मंडल खेलों आदि में भारतीय महिलाओं द्वारा प्राप्त पदक हैं, भारतीय महिलायें आज विभिन्न क्षेत्रों में सफलता के झण्डे गाड़ रही है। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर माध्यमिक स्तर की छात्राओं में खिलाड़ी तथा गैर–खिलाड़ी छात्राओं के शैक्षणिक स्तर और सामाजिक स्तर का पता लगाना आवश्यक है।

किसी भी राष्ट्र/समाज का विकास स्वस्थ नागरिकों द्वारा ही संभव है। स्वस्थ शरीर के लिए खेल एवं व्यायाम ही एक विकल्प है। इस संबंध में ऐतिहासिक परिदृश्य के विहंगावलोकन करने पर हम पाते हैं कि राष्ट्र/समाज में विभिन्न प्रकार के खेलों और व्यायाम का प्रचलन रहा है। समाज के विकास में महिलाओं की बराबर की हिस्सेदारी रही है। महिलाओं द्वारा समाज के सभी क्षेत्रों में बराबर की हिस्सेदारी को देखते हुए महिला खिलाड़ी छात्राओं के शैक्षणिक स्तर का समग्र मूल्यांकन आवश्यक है।

भारत में महिलाओं की खेलों में भागीदारी

भारत में वैदिक युग में महिलाओं के मनोरंजन की कुछ झलक देखने मिलती है। संगीत और नृत्य आन्तरिक खेलों का भाग माने जाते थे। जब नाटक अथवा दूसरी मनोरंजन की क्रियाएं संगठित की जाती थी तो लड़कियां केवल अपने बड़े के साथ अथवा अपने प्रेमियों के साथ उन्हें देखने जाती थीं, गेंद का खेल भी बाहरी खेलों में फैशनेबल माना जाता था।

महाभारत काल में शकुन्तला और कुन्ती अपने फुर्सत का समय खेलों में बिताती थीं। रामायण काल में लड़कियां शाम को खेलने के लिए अथवा अपने मित्रों से बात करने के लिए बगीचों में जाती थीं परन्तु यह प्रथा केवल कस्बों तक ही सीमित थी।

बाद में ऐसे भी उदाहरण मिलते हैं जहाँ लडकियाँ तैरने के लिए जाती थीं अथवा लुका छिपी का खेल या दौड़ो और पकड़ो का खेल खेलती थीं जो उनके शारीरिक अंगों को तथा उनके विकास को बढ़ाने में सहायक होते थे। ये खेल हर जाति की महिलाओं को खेलने का अधिकार था, लेकिन यह खेल भी लड़कियां विवाह से पहले ही खेलती थीं।

यह बात सत्य है कि भारत में मुसलमानों के आगमन से पहले हमारी महिलाओं को पर्याप्त स्वतंत्रता प्राप्त थी, उनकों खेलों में भाग लेने के लिए चाहे वह आन्तरिक खेल हो या बाह्य खेल हो पर्याप्त अवसर मिलते थे, परन्तु मुस्लिमकाल में महिलाएं चार दीवारी में ही कैद रहने लगीं और पर्दा व्यवस्था का अभ्यास अधिक बढ़ गया। अतः वे अपने फुर्सत के समय को सोने अथवा गप्प लगानें में बिताने लगीं।

महिलाएं जो धनी और उच्च वर्ग से संबंध रखती थीं वे इस बात में भाग्यशाली थीं कि उन्हें बाह्य खेलों में भाग लेने के अवसर मिलते थे। जबकि समाज के मध्यम वर्ग और निम्न वर्ग की महिलाओं को इस प्रकार के अवसर नहीं थे।[1]

महिलाओं द्वारा खेलों में भाग लेने से होने वाले सामाजिक परिवर्तन के अनेक दिलचस्प उदाहरण हैं। इन सामाजिक परिवर्तनों में महिलाओं को कई बार तथा कई प्रकार के खेलों में पुरूषों की तुलना में अवसर मिले हैं। समय के साथ इतिहास में कैसे बदलाव आया, क्योंकि स्त्री का दर्जा समाज में ऊँचा है परन्तु खेलों में यह कहीं–कहीं प्रतिबन्धित होता रहा है।

खेलों ने महिलाओं को आजादी दी है तथा खेल महिलाओं को प्रतिबंधित ड्रेस, व्यवहार, कानून, परम्पराओं तथा तकियानूसी विश्वासों से मुक्त होने के अवसर प्रदान करते हैं। महिला को प्रतिस्पर्धा नहीं करनी चाहिये या वह जीत नहीं सकती है, जैसे विचारों से भी मुक्ति मिली है, खेल दोंनों लिंगों के मध्य शक्ति संतुलन को बदलता है और महिलाओं को सशक्त बनाता है।

महिला खेलों की शुरूआत 1840 से 1900 के मध्य मानी जाती है, इसका संबंध इंग्लैण्ड में विक्टोरिया काल से है। इसका श्रेय महिलाओं के लिए शिक्षा से ज्यादा अवसर श्रमिक संख्या में बढोत्तरी, प्रोद्योगिकी का विकास, शहरीकरण का विस्थापन को जाता है। विक्टोरिया के इस काल में महिलाओं के द्वारा खेलों में भाग लेने पर भी प्रभाव पड़ा। समाज में आए परिवर्तनों ने धीरे–धीरे महिलाओं को भी खेलने के अवसर प्रदान किये।

विक्टोरिया काल में महिला की शारीरिक रचना संबंधित भ्रांतियों ने खेलों में भाग लेने को सीमित किया, यहां तक कि महिला के स्वास्थ्य को उसके गर्भाशय से जोड़कर देखा गया तथा बाद में उन्नीसवीं सदी के अंत में इस धारणा में बदलाव आया कि महिला की किसी भी बीमारी में चाहे वह गले या कमर का दर्द हो, गर्भाशय से जोड़ा गया। सभी फिजीशियन का विश्वास था कि महिलाएं नाजुक होती हैं तथा वे खेलों में भाग लेने के लिए कमजोर हैं, इन चेतावनियों के बावजूद भी महिलाओं ने खेलों में भाग लेना जारी रखा, जिस समय से महिलाओं ने खेलों में भाग लेना प्रारंभ किया तो इनमें कालेज एथलीट उस समय के ट्रेड सेन्टर बन गए, विरोधी मत वाले लोग जो महिलाओं के खेलों में भाग लेने के खिलाफ थे, ने कहा कि शारीरिक क्रियाओं में भाग लेने वाली महिलाओं में नारी वाले गुण खत्म हो जायेंगें तथा उनका आकार पुरूष की तरह मसकुलर बन जायेगा और उनके गर्भाशय को नुकसान होगा लेकिन कुछ लोग ऐसा भी मानते थे कि खेलों में भाग लेने से महिलाओं को गर्भाशय के मामले में लाभ पहुँचेगा। प्रारंभ में महिलाओं के खेलों में भाग लेने के लिए छोटे–छोटे प्रयास हुए लेकिन महिलाओं द्वारा खेलों में भाग लेना, महिलाओं के लिए अन्य क्षेत्रों की तरह स्वतंत्रता के प्रयासों की तरह ही खेल क्षेत्र में भी एक अभिव्यक्ति थी और नारी मुक्ति आन्दोलन उन्नीसवीं सदीं के अन्त तक आते–आते बहुत परिपक्व हो गया।[2]

महिला के भाग लेने वाले खेलों में से क्रिकेट भी एक खेल था जिसमें महिलाओं ने उस समय भाग लेना प्रारंभ किया, हालांकि यह खेल इस चेतावनी के बावजूद भी महिलाओं द्वारा खेला गया कि यह स्त्रियों के कंधों को गोलाकार बना देगा। तीरंदाजी भी एक खेल था, जिसमें महिलाओं ने पुरूषों के साथ खेलना प्रारंभ किया। महिला कई क्लबों की सदस्य बनी तथा प्रतियोगिताओं में भाग लेने की अनुमति मिली। गोल्फ खेल में महिलाओं ने खेलना प्रारंभ किया लेकिन इस खेल में घरों की महिलाओं के लिए भाग लेना संभव न हो सका। गोल्फ क्लबों में पुरूषों सदस्यों की पत्नियां या फिर उनकी बेटियों ने ही भाग लेना शुरू किया। इस काल में सबसे प्रिय खेल टेनिस था, जिसमें पुरूष तथा महिलाएं इकट्ठा खेलते थे। इस समय लोकप्रिय तथा क्रान्तिकारी खेल साईक्लिंग था। साईक्लिंग ने महिलाओं के लिए एक्टिव मनोरंजन, स्वास्थ्य लाभ तथा शारीरिक गतिशीलता की बड़ी संभावनाओं को इजात किया। यह वर्जित डेस से मुक्ति दिलाने का प्रतीक बना। साईक्लिंग ने महिलाओं को ऐसी वैकल्पिक क्रिया दी जो फैशन न होकर उनकी आजादी के लिए कुंजी थी, जिसने महिलाओं के लिए पारम्परिक वस्त्रों तथा चोली से मुक्ति दिलाई तथा महिलाओं को पारम्परिक ड्रेस से मुक्ति मिली।[3]

महिला खेलों में सबसे ज्यादा प्रभाव ड्रेस सुधार से पड़ा और उसके सामाजिक प्रभाव दूरगामी थे। उस समय फैशन तथा खेलों मे भाग लेने वाली महिलाएं कॉलेज की थीं। इन महिलाओं का समाज में बहुत प्रभाव पड़ा तथा इन्होनें अन्य महिलाओं को खेलों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। उस समय महिलाओं का खेलों में भाग लेना आज के संदर्भ में छोटी बात लगती है, मगर इसके प्रभाव क्रान्तिकारी थे। महिलाएं आज खेलों में पहले से ज्यादा चुनौतियां देने के लिए प्रयासरत हैं, आज के समय में महिलाओं को किसी भी खेल में भाग लेने की खुली छूट है। आज महिलाएं बॉडी बिल्डर्स, पॉवर लिफ्टर्स, फुटबाल खिलाड़ी आदि के रूप में प्रकट होती है। खेलों में महिलाएं पुरूषों को चुनौती दे रही हैं, आज की महिलाओं की टिपीकल छबि एक सशक्त महिला की है, जो प्रतिस्पर्धी है। खेलों में मजबूत है तथा खतरा उठाने में आनन्द लेती है। अन्य क्षेत्रों के साथ–साथ खेलों में भी महिलाओं का भविष्य प्रतिभाओं तथा नए–नए अवसरों के साथ क्षितिज पर बहुत चमकदार है।

हमारे देश में जो महिलाएं खेल का स्वरूप है। वह यूरोप तथा अमरीका के खेलों के साथ घनिष्ठता के साथ जुड़ा हैं। अठारहवीं शताब्दी में पश्चिम के साम्राज्यवादी देशों ने अपने–अपने उप निवेश विभिन्न देशों में स्थापित किये थे, उन आधीन देशों में आज के आधुनिक खेलों का प्रचार–प्रसार हुआ और इन देशों में खेलों को उसी रूप में अपनाया गया, जिस तरह से पश्चिमी देशों यानी की साम्राज्यवादी देशों ने चाहा। महिलाओं ने इन खेलों में जो भी नए ट्रेण्ड ळाए उनको धीरे–धीरे अन्य देशों में विशेषकर पराधीन देशों में आधुनिक खेलों के रूप में लगातार अपनाया जाना जारी रहा। आज ज्यादा धार्मिक कट्टर देशों को छोड़कर लगभग सभी देशों में महिलाएं बढ़–चढ़कर हिस्सा ले रहीं हैं। वर्तमान में हमारे देश में कोई खेल ऐसा नहीं होगा, जिसमें महिलाएं भाग न लेती हों।[4]

महिलाओं का खेल के प्रति रूझान और इसका इतिहास

सबसे पहले खेलों की शुरूआत ग्रीक देश में हुयी थी और वहॉ कई देवियों को ताकत के रूप में दिखाने तथा नारी महिमा की नई मिथ्याओं के प्रचलन के बावजूद आयोजित होने वाली प्रतिष्ठा प्रतियोगिताओं तथा ओलम्पिक खेलों में केवल पुरूष ही भाग लेते थे। इसके अतिरिक्त महिलाओं को दर्शक के रूप में भी खेलों को देखने की मनाही थी इसके बावजूद भी ग्रीक देश ने बाद में महिलाओं के लिए अलग से हैरा खेल के नाम से प्रतियोगिताएं प्रारंभ की थीं।

मध्य युगीन काल में महिलाओं को दर्शक के रूप में खेलों में भाग लेने की अनुमति मिली थी। महिलाओं के खेल मनोरंजन संबंधी

कोई प्रतियोगिता नहीं होती थी, कुछ ही मनोरंजन गतिविधियां होती थीं, वो भी राजा–नबाबों के साथ अठखेलियॉ तक सीमित थीं। इस समय की सामाजिक संरचना में महिलाओं का विशेष रूप में प्रदर्शन होता था। उच्च वर्ग में योद्धा के रूप में प्रतिष्ठित व्यक्ति युद्ध सम्बन्धित कौशल, विशेषकर घोड़ो पर बैठकर तलवार वाजी में तथा भाला आदि से संबंधित कौशल का प्रदर्शन होता था । ऐसे कौशल प्रदर्शन में महिलाओं को दर्शक के रूप में देखने की अनुमति थी।

उन्नीसवीं सदीं तक महिलाओं को सार्वजनिक तौर पर खेलों में भाग लेने की अनुमति नहीं थी, मगर धीरे–धीरे बदलाव आये। यह आधुनिक कला की शुरूआत थी, जिसमें सामाजिक गतिशीलता प्रबल थी और महिलायें घर के कार्य को छोड़कर बाहर कार्य करने लगी, विशेषकर यह निम्न तथा मध्यम वर्ग की महिलाओं को करना पड़ा।

उन्नीसवीं सदी में कुछ सीमित प्रयासों के बावजूद कई लोग मानते थे कि महिला खिलाड़ियों की स्थिति विक्टोरिया काल की आदर्श महिला छबि के विपरीत सुधरी, मगर विक्टोरिया काल में महिला की पारंपरिक आदर्श छबि की ही ज्यादा सुदृढ़ करने की कोशिश की गई। 1950 तक की महिला के खेलों तथा प्रतियोगिताओं में भाग लेना सीमित था। अब महिलाओं के द्वारा खेलों में और ज्यादा भाग लेने पर चर्चा जारी थी। इस चर्चा का केन्द्र बिन्दु उच्च स्तरीय प्रतियोगिताओं को लेकर था जिसमें कि महिलाओं को ताकत तथा सहन शक्ति प्रधान खेलों में भाग लेना चाहिये की नहीं ? हालांकि इस समय तैराकी तथा एथलेक्टिस में भी महिलाओं ने द्वितीय विश्व युद्ध के बाद खेलों में बेहतर प्रदर्शन किया था। वर्तमान में किसी भी इवेंट में आनुपातिक रूप से महिला तथा पुरूष के रिकार्ड में अन्तर बहुत कम रह गया है। हालांकि अब भी महिलाओं के द्वारा खेलों में भाग लेने को कई आधारों पर अनुचित ठहराने की कोशिश की जाती रही है, जिसमें मेडिकल आधार तथा सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्य शामिल हैं।

महिला प्रतिस्पर्धा के विरूद्ध पूर्वाग्रह महिलाओं द्वारा खेल प्रतियोगिता में भाग लेने पर रूकावटें विक्टोरिया काल में प्रारंभ की गई थी, जिनका असर बाद में भी देखा गया। इस काल का ही प्रभाव था कि आदर्श महिला ने अपनी देशभक्ति कर्तव्यों के तहत पुरूष साथी को आकर्षित करना, बच्चों की देखभाल और पति की सेवा करना चाहा। किसी भी अन्य गतिविधि जिससे इन कर्तव्यों में रूकावट डालने की कोशिश की गई, उनको रोका गया।

महिला सामाजीकरण में पारंपरिक भूमिकाओं पर जोर दिया गया, जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक जारी रहा। इनका प्रभाव महिलाओं के खेल तथा सामाजीकरण पर भी पड़ा और इसका परिणाम यह हुआ कि आज भी इन्हीं कारणों से महिलाओं के खेलों में भाग लेने को प्रोत्साहन नहीं मिलता है। भारत में भी महिलाओं द्वारा खेलों में भाग लेने को सामाजिक कार्यो में बाधा के रूप में देखा जाता है। खेलों में भाग लेने वाली महिलाओं को शादी के चयन में सामाजिक रूप में हीनता का सामना करना पड़ता है क्योंकि जहॉ खेल महिलाओं में आत्म विश्वास पैदा करते हैं और वो निडर बनती हैं बहॉ इन्हीं गुणों को शादी के चुनाव में पुरूष द्वारा निषेध माना जाता है, क्योंकि पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना में महिला के नाजुकता तथा घरेलू होने के गुणों को प्राथमिकता दी जाती है।[5]

महिलाओं की खेल में भागीदारी

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद ही महिलाओं के द्वारा खेलों में ज्यादा भाग लेने के रास्ते खुले और इसका श्रेय जाता है महिलाओं के द्वारा युद्ध में किए गए महान योगदान को। युद्ध के दौरान महिलाओं ने मिलिट्री में युद्ध से संबंधित अन्य आवश्यकताओं के लिए एक बहुत बड़ी वर्कफोर्स के रूप में योगदान दिया था जिसके माध्यम से महिलाओं ने नाजुक ग्रहणी की पारम्परिक को तोड़ा। महिलाओं ने खेलों में उच्च प्रदर्शन तथा परफोरमेंस प्रदान किया तथा बहुत सारे इवेन्टस में भाग लिया।

प्रथम भागीदारी

यह तो निश्चित है कि खेलों में पुरूषों की तुलना में महिलाओं की भागीदारी बहुत कम रही है इसके बाबजूद भी महिलाओं की भागीदारी मनोरंजन से लेकर प्रतिस्पर्धा खेलों तक में कायम है और उसी रूप में विद्यमान है। कनाडा में 1981 के सर्वे में महिलाओं के कुछ सवालों के जबाब में पाया गया कि महिलाओं की भागीदारी 1976 से 1981 के मध्य में खेल प्रतिस्पर्धा में 46 प्रतिशत से लेकर 76 प्रतिशत तक बढ़ी तथा शारीरिक कियाएं केवल 58 प्रतिशत से लेकर 71 प्रतिशत तक बढ़ी । इस तरह कुल मिलाकर इस अवधि में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी मगर बाद में प्रतिस्पर्धात्मक गतिविधियों में ज्यादा भागीदारी बढ़ी और जहाँ तक शारीरिक कियाओं का प्रश्न है तो वह लगातार जारी है और विशेषकर खेल प्रतिस्पर्धा में भागीदारी बढ़ने का श्रेय उपलब्ध सुविधाओं तथा अवसरों को जाता है जो कि जोगिंग, मैराथन तथा टरायथलान जैसे इवेन्ट्स तथा रैकेट खेलों में भागीदारी को बढ़ाते हैं।

ये खेल गतिविधियॉ उन महिलाओं द्वारा ज्यादा की गई है, जो पढ़ी– लिखी अकेली हैं तथा शादीशुदा नहीं हैं। इसके अतिरिक्त खेलों के प्रति यह रूझान घरेलू महिलाओं की बजाय इन महिलाओं पर ज्यादा पाया गया है जो विद्यार्थी या रोजगार शुदा है। संक्षिप्त रूप में शादी–शुदा महिलाओं में लेजर स्पेंट अर्थात् समय को बिताने की कमी पायी गई। इसके अतिरिक्त यह भी बात पायी गयी है कि खेलों में भाग लेने के लिए उनके पास खेलों में निर्णय लेने की स्वतंत्रता कम है तथा वे कम आत्म निर्भर हैं। घरेलू महिलाओं के पास संसाधन की कमी तथा घर की ज्यादा जिम्मेदारी होने की वजह से उनके मनोरंजन के कार्यक्रमों में ज्यादा रूकावटें आती हैं।[6]

खेलों में भाग लेने की गंभीर गिरावट लड़के–लड़कियों में 12 वर्ष की उम्र के बाद दर्ज की गई और इस उम्र तक के लड़के और लड़कियों में कोई गिरावट दर्ज नहीं की गई है मगर इसके बाद सभी उम्र की लड़कियों के द्वारा खेलों में भाग लेना कम पाया गया। सबसे ज्यादा गिरावट स्कूल शिक्षा के बाद दर्ज की गई। मिलर ब्रीविंग तथा लॉय एण्ड रण्डमेनने रिपोर्ट में वर्णन किया कि अमेरिका में खेलों में पुरूष ज्यादा भाग लेते हैं हालांकि महिलाएं भी खेलों में भाग लेती हैं, मगर तुलनात्मक रूप से कम। हालांकि पिछले दिनों महिलाओं द्वारा खेलों में भागीदारी पहले की तुलना में बढ़ी है लेकिन यह रूझान आगे जारी रहेगा या ज्यादा बढ़ेगा, यह निश्चित तौर पर कहना मुश्किल है। महिलाओं की भागीदारी में आगे कौन सा तत्व ज्यादा प्रभावशाली तथा निर्णायक रहेगा? इसमें आर्थिक संसाधन तथा अवसरों की बहुलता उल्लेखनीय भूमिका निभायेगी।[7]

महिलाओं को खेलों में भाग लेने की स्वतंत्रता मुख्य रूप से ओलम्पिक खेलों से मानी जाती है। प्राचीनकाल में ओलम्पिक खेलों में भाग लेने की सख्त मनाही थी। आधुनिक ओलम्पिक खेलों में भी 1896 से महिलाओं को औपचारिक खेलों में मनाही थी, लेकिन 1904 के ओलम्पिक खेलों में गोल्फ तथा टेनिस में महिलाओं को भाग लेने की अनुमति दी गई, इसके बाद धीरे–धीरे अन्य खेलों में भाग लेने की अनुमति मिलने लगी। कुछ समाज में महिलाओं के अधिकारों तथा अफसरों की ज्यादा बहुलता पाई गयी। महिलाओं को उन समाजों के खेलों में ज्यादा पारम्परिक रूप से पृथक किया गया, जहाँ महिलाओं की पहचान भी पारम्परिक थी।

द्वितीय भागीदारी

महिलाओं की खेल में द्वितीय भागीदारी से हमारा तात्पर्य है कि महिलाओं का खिलाड़ी के रूप में सक्रिय न होकर अलग दर्शक तथा नेतृत्व के रूप में सक्रिय होने से है। महिलाएं दर्शक के रूप में कम भागीदारी रखती हैं और यही हालात खेलों के नेतृत्व से है और हमारा मुख्य सरोकार खेल संगठनों तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यो से है, जैसे कोच तथा शारीरिक अध्यापकों तथा अन्य खेल कार्यो से सम्बन्धित है। काफी दिनों से महिलाओं की संख्या दर्शक के रूप में बढ़ी लेकिन पुरूषों की तुलना में कम है।

वर्तमान में महिलाओं की दर्शक के रूप में खेलों में भागीदारी बढ़ी है। फिर भी पुरूषों की तुलना में महिलाओं का खेलों में दर्शक के रूप में कम भागीदारी का कारण मुख्यतः पारम्परिक रूप से महिलाओं के द्वारा बच्चों की देखभाल, घर के कार्यो को संभालना तथा अन्य सामाजिक तथा सांस्कृतिक बाधाएं हैं। महिलाओं को घर से ज्यादा बाहर जाने के लिए सामान्यतः ज्यादा प्रेरित नहीं किया जाता है। वर्तमान सामाजिक प्रणाली में पितृसत्तात्मक आधार पर आदर्श महिला के चित्रांकन में घरेलू होना अनिवार्य है। खेल दर्शक का कार्य पुरूषों के लिए उपयुक्त है और खेल स्टेडियम में सबसे ज्यादा संख्या पुरूष दर्शकों की मिलती है।[8]

छात्राओं के विरूद्ध खेल में भेदभाव तथा असमानता

खेलों में छात्राओं को विषमता का सामना करना पड़ता है। छात्राओं की खेलों में भागीदारी का श्रेय व्यक्तिगत प्रयासों तथा महिलाओं के लिए कार्यरत समूहों को जाता है। समाज के स्तर पर महिला खिलाड़ियों के उत्साहित या प्रेरित करने वाले बहुत कम लोग हैं। नारीवादी संगठन मांग रखते हैं कि महिलाओं के लिए सरकार खेलों में विशेष ध्यान दें और खेलों में वर्तमान में जारी पुरूष मॉडल में परिवर्तन कर महिलाओं के पक्ष में कदम उठाये, क्योंकि वर्तमान मॉडल महिलाओं के विरूद्ध विषमताओं से भरा है। यह विषमता केवल सुविधाओं, बजट तथा कार्यक्रमों तक सीमित नहीं है यह पितृसत्तात्मक समाज की भी देन है। जहाँ सामाजिक तथा सांस्कृतिक स्तर पर भी महिलाओं के साथ भेदभाव किया जाता है।

महिला खिलाड़ियों को नये कानून तथा नीतियों के लिए मांग

भारत में अलग से महिलाओं के खेलों के लिए नए कानून तथा नीतियों के बारे में सोचा भी नहीं गया है, मगर अमेरिका, कनाडा जैसे देशों में महिलाओं की खेलों में ज्यादा भागीदारी के लिए कुछ वर्ष पहले ही कानूनी प्रक्रिया का प्रयास शुरू हुआ है। 1986 से कैनेडा में महिलाओं के लिए खेलों में भागीदारी के लिए बनाए कानून पर बहस हो रही है, और अभी तक महिलाओं के लिए बराबरी तथा न्याय की बात पूरी नहीं हुई है। इन कानूनों का विरोध करने वाले लोगों द्वारा सरकारी हस्तक्षेप के विरोध में तर्क दिये गए तथा लॉवी भी बनाई गई।[9]

भारत में अभी तक इस बारे में सोचना स्वप्न जैसा है, खेलों में हमारी प्राथमिकता किसी तरह से ओलम्पिक जैसे अन्तर्राष्टीय प्रतियोगिता में सम्मानजनक स्थान हासिल करना है। खेलों के द्वारा वंचित सामाजिक वर्गो को न्यायपूर्ण स्थान हासिल कराना बहुत दूर की बात है, जिसमें सरकारी हस्तक्षेप हो। खेल एक बहुत ही गतिशील क्षेत्र है और आधुनिक समय में महिलाओं के द्वारा अपनी बराबरी तक हक का रास्ता बनाने का मतलब है कि भारत में महिलाएं अन्य क्षेत्रों में बहुत तरक्की प्राप्त कर चुकी हैं। मगर ऐसा नहीं है और इसीलिए भारत में महिलाओं द्वारा इस क्षेत्र में समानता का स्थान हासिल करना अमेरिका तथा अन्य पश्चिमी दुनिया से भी ज्यादा मुश्किल है।

महान महिला खिलाड़ियों की छबि के खिलाफ तर्क

भारत में महिला खिलाड़ियों को दोहरा पिसना पड़ता है। यहाँ के रीति–रिवाज बहुत मजबूत हैं व सामाजिक संरचना बहुत ही दकियानूसी है। दूसरी मुसीबत यह है कि महिलाएं खेलों में अच्छा प्रदर्शन करने के बावजूद आर्थिक रूप से निर्भर नहीं हो पाती है। मगर खेलों से आत्म निर्भरता तथा आजादी का अहसास नई जिन्दगी को जीने के लिए प्रेरित करता है। महिला खिलाड़ी विरोधाभास में फस जाती है और नतीजा यह निकलता है कि महिला ही खेलों के प्रति उदासीनता प्रकट करती है। राजवीर औरआशुतोष[10] ने एक शोध में पाया कि महिलाएं खेल अनुभव एवं आत्म विश्वास प्राप्त करती हैं, लेकिन यह शंका व्यक्त की गई है कि महिला खिलाड़ी को अच्छी पत्नि के तौर पर स्वीकार नहीं किया जाता है। भारत में महिला खिलाड़ियों को अमेरिका जैसे देशों में ज्यादा सुरक्षा की जरूरत है।[11]

महिला खिलाड़ियों तथा महिला खेलों को निम्न दिखाना

वह एक अच्छी खिलाड़ी है, मगर अच्छी औरत नहीं है, ऐसे वक्तव्य हम आये दिन सुनते है। ऐसी बातें इसलिए होती है कि औरतें विषम लिंग कामी होनी चाहिये और अच्छी औरत बनने के लिए आकर्षक होनी चाहिए, ताकि पुरूष उनकी तरफ खिचे चले आयें, ऐसे विचार महिला एथलीट को निम्न दिखाते हैं। यह होमोफोबिया है जो समलिंगी होने के डर से पैदा होता है। इसी डर से बहुत सारी महिला एथलीट अपने को सच्ची महिला सिद्ध करने के लिए प्रयास रहती हैं। महिला खिलाड़ी स्वयं को ऐसी औरत साबित करने के लिए शादी करना, बच्चे पैदा करना, देखभाल करना, घरेलू महिला बनना परम दायित्व समझती हैं और प्राथमिकताओं के कारण कई महिलाएं खेलों को त्याग देती हैं। समलिंगी (Lesbian) बनने का डर महिला खिलाड़ियों पर पारम्परिक भूमिकाओं में सक्षम होने का दबाब बढ़ाता है और यह दबाब संभावित मुखर तथा लैस विरान महिला कोच, मैनेजर आदि को गौण तथा चुप रखता है।[12]

औरतों के द्वारा अच्छा खेलने पर भी अपेक्षा की जाती है कि वे पुरूषों की तरह वास्तविक खेल नहीं खेलती। इसका मतलब निकाला जाता है कि महिलाओं को पुरूषों की तरह आक्रामकता तथा शारीरिक प्रधानता प्रकट करनी चाहिये लेकिन खेलों में यह नहीं होता है, बल्कि संतुलन, सामंजस्य तथा शालीनता भी प्रकट होती है, जो महिला खिलाड़ी की पहचान के रूप में खेलों की व्याख्या करती है। मगर इन पक्षों के नजर अंदाज कर महिला खिलाड़ियों को निम्न तथा दोयम दर्जे का दिखाया जाता है। महिला खिलाड़ियों को उनके निकनेम जैसे रेडी वियर आदि से पुकारा जाता है और पुरूषों द्वारा परिभाषित खेल में महिलाओं को सम्मान नहीं मिलता है तो भी महिलाओं ने खेलना जारी रखा है। महिला खेलों को आर्थिक मदद देने का आधार भी उनके द्वारा प्रदर्शित खेलों में नाजुक औरत जैसे व्यवहार की अपेक्षा की जाती है। ऐसे विपरीत हालतों में महिलाओं ने खेलना जारी रखा हुआ है और अपने ऊपर लेबलड (Labeled) नाम की परवाह भी नहीं करती हैं। [13]

खेलों में लिंग समानता

खेलों में महिलाएं कितना भाग लेती हैं तथा कितने अवसर इनके लिए उपलब्ध हैं ? खेलों में महिलाओं के लिए समानता लाना बहुत कठिन है। न्याय संगत्ता की बात करने से लगता है कि न्याय संगत्ता को निर्मित करने के लिए विशेषाधिकार प्राप्त लोग अपनी स्थिति को छोड़ने तथा उसमें हिस्सेदारी करने के लिए तैयार नहीं होते हैं। यह बात खेलों में नजर आती है, जहाँ पर पुरूष अपनी स्थिति तथा ताकत को छोड़ने के लिए तैयार नहीं हैं। महिलाओं द्वारा खेलों में ज्यादा भागीदारी तथा ज्यादा अवसर बिना संघर्ष किये हासिल नहीं हो सकते हैं, इसके लिए सार्वजनिक सम्बन्ध, राजनीतिक लोबिंग, सार्वजनिक दबाब, शिक्षा तथा महिला हितों के लिए आन्दोलन की जरूरत हैं।

महिला समानता के लिए संघर्ष करने वाले के लिए मूल कारणों को जानना तथा आलोचनात्मक दृष्टि से प्रधान स्वरूपों का मूल्यांकन करना अनिवार्य है। खेलों में भाग लेने वाली महिलाओं के लिए खेलों तथा संगठनों के साथ लिंग संबंध तथा समाज में विद्यमान मशकुलैनिटी (Masculinity) के आकार आदि अन्य मुद्दों को जाने बिना खेलों तथा समाज में पुरूष वर्चस्व तथा ताकत पर एकाधिकार को खत्म करना मुश्किल है। महिला के लिए समानता प्राप्त करना भी मुश्किल है। खेल संगठनों तथा खेल गतिविधियों में पुरूष एकाधिकार स्थापित करने वाले मुल्य तथा मानदण्ड वर्षो से निर्मित होते रहते हैं, उनको चुनौती दिये बिना महिलाओं के लिए खेलों में चमकदार भविष्य की कामना करना व्यर्थ है।

समानता के लिए आवश्यक कदम

खेलों में महिला समानता के लिए महत्वपूर्ण कार्यक्रमों को लागू करना आवश्यक है जो महिला की समस्याओं को समग्र रूप से उठायें। जिससे मजबूत महिला छबि बने ताकि महिला सशक्तिकरण को बल मिले और आगे बढ़ें।

महिलाओं के खेलों में भाग लेने से उनमें ताकत पैदा होती है जो उन्हें सुदृढ़ बनाती है। खिलाड़ी बनने वाली विशेषकर कौशलपूर्ण एथलीट महिला की स्वयं को देखने की दृष्टि में ही छबि बदल जाती है। एक व्यक्ति के रूप में खिलाड़ी बनना महिला को ज्यादा सक्षम, मजबूत बनाता है तथा अपनी जीवन क्षेत्र में स्वयं को ज्यादा नियंत्रण पैदा करता है। यह इसलिए ज्यादा महत्वपूर्ण बन जाता है कि समाज में महिलाओं को अपने चारों तरफ कमजोर तथा अन्य पर निर्भरता के रूप में दिखाया जाता है।

खेलों में भाग लेने के ज्यादा अवसर महिलाओं को अपनी छबि बदलने के मौके देते हैं। समाज में कई तरह की छबियां महिलाओं को एक उपयोग तथा प्रयोग के उत्पाद के रूप में प्रस्तुत करती हैं। महिलाओं तथा लड़कियों में छबियों के माध्यम से स्वयं को वस्तुनिष्ठता के रूप में देखने की आदत पड़ जाती है। खेलों से प्राप्त अस्मिता तथा ताकत का भाव महिलाओं की स्वयं की देह छबि में निहित है और खेल में भागीदारी करने के कारण महिलाएं अपने को वस्तु के रूप में देखने से छुटकारा पाती है। महिलाओं में शारीरिक कौशलता का विकास स्वयं को ज्यादा ताकतवर तथा आत्मविश्वास से सराबोर बनाता है। खेलों में भाग लेने से महिलाएं न केवल स्वयं को फिजिकली फिट बनाती है बल्कि अपनी नाजुक तथा असुरक्षित छबि से छुटकारा पाकर ज्यादा आत्मविश्वासी तथा आत्म निर्भर बनाती है। महिलाओं द्वारा खेलों में भाग लने पर अपने आपकों को आत्म निर्भर पाया तथा महिला के रूप में स्वयं को नये अर्थो में पाया। खेलों में भाग लेने से सशक्तिकरण की भावना पैदा होती है तथा महिलाएं खेल से प्राप्त उपलब्धि को लिंग समानता के संबंध में देखती हैं। खेलों में भाग लेने से महिलाएं स्वयं को एक नई पहचान तथा व्याख्यान देने के अवसर के रूप में देखती हैं और जो महिलाएं खेलों में भाग नहीं लेती उनके वर्चस्व को चुनौती देती हुई आगे बढ़ती हैं।

खेलों के माध्यम से महिलाओं द्वारा प्राप्त सशक्तिकरण की समझ उनको खेलों तथा संगठनों में नेतृत्व के लिए प्रबल दावेदार बनाती है। लेकिन ऐसा होने का मतलब ऐसा कतई नहीं है, इससे सभी महिलाएं सशक्त महसूस करती है। कुछ महिलाओं द्वारा नेतृत्वकारी भूमिका में आने का मतलब यह नहीं है कि वे इन संगठनों में आलोचनात्मक दृष्टि से समानता के प्रश्न को देखेगी। अध्ययनों में यह पाया गया कि महिलाओं द्वारा पुरूषों के साथ निभाने के बावजूद भी सामाजिक गतिशीलता बढ़ाने की बजाय पुरूषों से प्रभावित रहती हैं।

महिला खिलाड़ियों द्वारा फेमिनिज्म (Faminism) के विरूद्ध नकारात्मक रूझान पाया है और महिला की सामाजिक गतिशीलता को स्वयं के मुद्दे को दूर रखती है, उनका ऐसा करने के निश्चित कारण है कि महिला आन्दोलन से अपने आप को दूर रखें, क्योंकि सत्ता के खेल में पुरूष की मजबूत स्थिति कहीं उनका व्यक्तिगत नुकसान न हो जाये और कहीं उनकी पहचान एहसान फरामोश न हो जाये या फिर उनके लैंगीकरण पर सबाल न उठ जाएं। खेलों में उच्च स्थिति प्राप्त महिलाएं समाज में स्वयं की स्थिति को मजबूत करने के प्रति प्रतिबद्ध होती है, मगर इन महिलाओं का खेलों में भाग लेना तथा जो महिलाएं नहीं खेलती उनके विचारों में कोई विवाद नहीं होता है और वे महिलाओं के समानता के मुद्दों से तथा महिला एकता के भाव के साथ जुड़ी हुयी नहीं होती हैं। महिला की व्याप्त अन्यायपूर्ण छबि से समझौता करती है। इसके विपरीत खेलों में नेतृत्वकारी स्थिति में महिलाएं व्यक्तिगत सशक्तिकरण माध्यम से जुड़े अन्य प्रश्नों तथा मुद्दों को सिद्धांत से उठा सकती हैं और ऐसी महिलाएं खेल संगठनों में प्राप्त अपनी परिस्थिति के कारण महिलाओं से जुड़ी समस्याओं तथा मुद्दों को उठाने में प्रभावशाली भूमिका निभा सकती हैं।[14]

महिला खेल प्रौद्योगिकी व सामाजिक मुद्दे

महिला द्वारा खेलों में भाग लेने के संबंध में प्रौद्योगिकी ने मुद्दों को बहुत गहराई से प्रभावित किया है। ऐतिहासिक तौर पर महिलाओं के खेलों में भाग लेने को कई कारणों से हतोत्साहित किया जाता रहा और आज भी समाज में बहुत सारे परिवर्तनों के बावजूद भी जारी हैं। लेकिन महिलाओं का खेल में भाग लेना जारी रहा है, इसके बावजूद कई सामाजिक मुद्दे ऐसे हैं जिनकों सम्बोधित करना आवश्यक है। प्रौद्योगिकी ने खेलों को दो तरह से प्रभावित किया है। प्रथम खेलों में तकनीकी साधन, इक्विपमेन्ट (Equipment) तथा अन्य खेल उत्पादों से संबंधित प्रौद्योगिकी ने मौलिक परिवर्तन किये हैं, जिसका असर उन सामाजिक मुद्दों पर भी पड़ा है जहाँ प्रौद्योगिकी ने पूरे समाज को प्रभावित किया है वहीं प्रौद्योगिकी ने खेलों की मुख्य संरचना को बदला है और उनमें मुख्य रूप से महिला हिस्सेदारी उल्लेखनीय है। द्वितीय सबसे पहले तो वे मुद्दे हैं जो खेलों में महिला हिस्सेदारी के रास्ते में बाधा बने हुये हैं, जिनमें शामिल है, महिला की पारम्परिक भूमिका, रोजगार, नये क्षेत्रों की उत्पत्ति, महिला गतिशीलता, विचारों का उद्भव आदि।[15]

महिला की पारम्परिक भूमिका तथा खेल

महिला की पारम्परिक भूमिका खेलों में महिला हिस्सेदारी के रास्ते मुख्य बाधा बनी हुई थी। महिलाओं की ज्यादातर भूमिकाएं घर से प्रारंभ होकर घर पर ही खत्म होती थी, जिनमें प्रमुख रूप से बच्चे पैदा करना, घर की रसोई संभालना, बच्चों की देखभाल करना तथा पुरूषों की कामुकता को संतुष्ट करना आदि। औद्योगिक क्रान्ति ने समाज को मौलिक रूप में बदल दिया, जिनमें विशेषकर महिलाओं की पारम्परिक भूमिका में भी परिवर्तन आए और महिलाएं घर से बाहर निकलने लगीं तथा खेलों में भाग लेने लगीं। महिलाओं में सबसे पहले यह परिवर्तन उच्च घरानों की महिलाओं मे देखने को मिला। निम्न परिवार की महिलाएं भी बॉक्सिंग जैसे खेलों में भाग लेने लगीं। पहले महिलाओं की खेलों में यह भागीदारी मनोरंजन तथा स्वास्थ्य तक सीमित थीं।

रोजगार के अवसर

प्रौद्योगिकी ने समाज को बहुत गहराई में बदला और परिणाम स्वरूप महिलाओं के लिए घर के बाहर कार्य करने के अवसर उपलब्ध हुए। मगर महिलाएं अब दो पार्टो में बंट गई एक तरफ घर की जिम्मेदारी तथा दूसरी तरफ बाहर के रोजगार कार्य, मगर फिर भी महिलाओं के लिए खेलों के अवसर बढ़ने लगे। महिलाओं को स्कूल तथा कालेजों में खेलने के अवसर मिलने लगे। रोजगार ने महिलाओं के अन्दर नया आत्म विश्वास पैदा किया जिससे स्वास्थ्य तथा मनोरंजन के प्रति जागरूता पैदा की, परिणामतः महिलाएं खेलों में भाग लेने लगीं। आने वाले समय में खेलों में भी महिलाओं के लिए कोच तथा शारीरिक अध्यापक के रूप में रोजगार मिलने लगे।

नई प्रौद्योगिकी के जन्म से पहले महिलाएं घर के कार्यो तक सीमित थीं। मगर इसके प्रभाव में महिलाओं को बाहर जाने तथा रसोई संभालने के अतिरिक्त कार्यो को करने के अवसर उपलब्ध कराये। जिस कारण महिलाओं की सामाजिक गतिशीलता में बढ़ोत्तरी हुयी। पहले महिलाओं को खेलों को देखने की अनुमति नहीं थी। मगर बाद में महिलाएं खेलों को देखने लगीं तथा सबसे पहले मनोरंजन के रूप में भाग लेना प्रारंभ किया। साथ ही साथ अन्य क्षेत्रों में प्रगति हुयी, प्रगति ने महिलाओं का खेलों में भाग लेना बढ़ने लगा।

महिला खिलाड़ियों को खेलों में घर की तरफ से प्रोत्साहन घर की मुल्य तथा विश्वास पद्धति पर निर्भर करता है। इसका मतलब है कि अगर माता—पिता तथा घर के अन्य सदस्य शिक्षित हैं तो खेलों में महिलाओं द्वारा चाहे ज्यादा भागीदारी नहीं चाहते मगर स्वास्थ्य के लिए खेल गतिविधियों में लड़कियों को भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। मगर निम्न आय के परिवारों में भी लड़कियों को खेलों में भाग लेने के लिए ज्यादा प्रोत्साहन रोजगार पाने हेतु किया जाता है। इस तरह से महिलाओं का खेलों में भाग लेना सामाजिक स्थिति पर निर्भर करता है।

यह कहना सही है कि खेलों में महिलाओं को विषमता का सामना करना पड़ता है। खेलों में महिलाओं की भागीदारी का श्रेय व्यक्तिगत प्रयासों तथा महिलाओं के लिए प्रतिबद्धित समूहों को जाता है। समाज के स्तर पर महिला खिलाड़ियों के लिए उत्साहजनक या फिर प्रेरित करने वाले मूल्य नहीं हैं। यदि सरकार महिलाओं के लिए खेलों में विशेष ध्यान दें और खेलों में वर्तमान मॉडल को परिवर्तन कर महिलाओं के पक्ष में नए खेल कार्यक्रम बनाएं, तो उचित होगा क्योंकि वर्तमान मॉडल महिलाओं के विरूद्ध विषमताओं से भरा है। यह विषमता केवल सुविधाओं, बजट तथा कार्यक्रमों तक सीमित नहीं, यह पितृसत्तात्मक समाज की भी देन है। जहाँ सांस्कृतिक तथा सामाजिक स्तर पर भी महिलाओं के साथ भेदभाव किया जाता है।

खेलों में भी तथा खेलों के बाहर भी महिला खिलाड़ियों को नई दिशा तथा मजबूत छबि बनाने की जरूरत है। महिला खिलाड़ियों की छबि निर्माण के लिए सामाजिक व्यवस्था से प्रोत्साहन तथा मजबूत आधार की जरूरत है। हालांकि आजकल पहले जैसे बुरे हालात नहीं है।[16]

सामान्यतः विद्यालयों में अध्ययनरत खिलाड़ी और गैर—खिलाड़ी छात्राएं जिन परिवारों से सम्बन्धित होते हैं उनकी सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति का उनके शैक्षणिक स्तर पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। छात्राओं की आकांक्षा का स्तर सामाजिक, आर्थिक स्तर पर निर्भर करता है। उच्च सामाजिक, आर्थिक स्तर से सम्बन्धित छात्राओं का उद्देश्य उच्च, मध्यम तथा निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर से सम्बन्धित छात्राओं का उद्देश्य निम्न होता है। भिन्न—भिन्न छात्राओं के उद्देश्य भिन्न—भिन्न होने के कारण उनकी शैक्षणिक उपलब्धि भी भिन्न होती है। अधिकांश विरत छात्राएं उन परिवारों की होती हैं जिनके माता—पिता व्यापारी वर्ग के हैं। विरत छात्राओं के माता—पिता आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न भी थे, विरत छात्राओं के परिवार छोटे और माता—पिता की शिक्षा कम थी इनके माता—पिता अधिनायकवादी थे। अतः उनको खेलों की शिक्षा प्राप्त नहीं हो पाई।

सामान्यतः माना जाता है कि सांस्कृतिक और सामाजिक आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न परिवारों की छात्राओं की विद्यालयीन उपलब्धि उच्च होती है। मध्यम वर्ग की छात्राएं भी पढ़ाई करने जाती हैं और स्कूल छोड़ देती हैं। अतः धन ही अच्छे घर की कसौटी नहीं है। छात्राओं पर पैसा ही नहीं समय भी खर्च करने की जरूरत होती है। गरीबी छात्राओं की सुरक्षा, शिक्षा एवं खेल—कूद पर बाधक अवश्य होती है, किन्तु सहृदय और समझदार अभिभावक अपने अभाव ग्रस्त घर को प्यार और सहानुभूति से सुखद और मधुर बना सकते हैं तथा उनका शैक्षणिक

तथा खेल–कूद का स्तर ऊँचा उठा सकते हैं।

हमारे देश में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों की स्थितियाँ अलग हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में छात्राएं प्रारंभिक शिक्षा के लिए पूर्ण रूप से अपने परिवार पर निर्भर रहती हैं, फलस्वरूप शहरी व ग्रामीण छात्राओं पर घर की परिस्थितियों और पारिवारिक दृष्टिकोणों का प्रभाव अधिक बुरा पड़ता है। आमतौर पर शहरी छात्राओं में अपने पास–पड़ोस के बच्चों के कार्यो में भाग लेने और व्यस्कों के सामाजिक संबंधों का अनुभव प्राप्त करने के कुछ अच्छे अनुभव पाए जाते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के पारिवारिक वातावरण में अन्तर होता है, जो उसकी शैक्षणिक उपलब्धि में दिखायी पड़ता है। परिवार के साथ शिक्षक का व्यक्तित्व शैक्षणिक उपलब्धि भी छात्र–छात्राओं को प्रभावित करता है। एक उत्साहवर्धक शिक्षक अपने शिष्य को गर्त से भी उठा सकता है। गुरू जिसे भारत वर्ष जैसे पावन पवित्र देश में भगवान से बढ़कर माना गया है। छात्र–छात्राओं को उचित सामाजिक, शैक्षणिक एवं नैतिक विकास को उच्च करने में अहम् भूमिका निभाता है। अध्यापक के व्यवहार का बालकों के मनोवैज्ञानिक विकास पर विशेष प्रभाव पड़ता है। यदि अध्यापकों को व्यवहार सकारात्मक, उद्देश्यपूर्ण सहानुभूतिपूर्ण तथा प्रेरक होता है तो विद्यार्थी भी सजगता, रचनात्मकता, आत्म नियंत्रण आदि गुणों से मुक्त होता है। यदि अध्यापकों में प्रेरणा, कल्पनाशीलता होती है तो छात्राओं का व्यवहार भी समुचित होगा। विद्यालयों में अध्ययनरत् खिलाड़ी तथा गैर–खिलाड़ी छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि में विद्यालयीन वातावरण, खेल का मैदान तथा खेल सामग्री की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विद्यालय का सम्पूर्ण वातावरण बालकों पर अपना प्रभाव डालता है। विद्यालय भवन, शिक्षक का व्यवहार, दृष्टिकोण, अध्ययन कक्ष, उपकरण, पुस्तकालय आदि बालक की शैक्षणिक अनुभव प्रदान करने में सहायक होते हैं। विद्यालय भवन में व्याप्त अस्वच्छता और आकर्षण अध्ययन उपकरणों का अभाव, स्तरीय पुस्तकें, प्रभावहीन अध्ययन विधियाँ आतातायी अनुशासन और विषयों के चुनाव में मार्गदर्शन का अभाव आदि कारणों से छात्र–छात्राओं का अध्ययन प्रभावित होता है। जिनमें शैक्षणिक उपलब्धि की प्रभाविता होती है। विद्यालय का वातावरण बालकों की शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करता है। यदि विद्यालय का वातावरण अच्छा है तो बालकों का विकास उच्चतम होगा, इसके विपरीत दूषित वातावरण का प्रतिकूल प्रभाव बालकों पर पड़ता है। यदि विद्यालय का अनुशासन कठोर और लोकतन्त्र की भावना का अभाव होगा तो छात्राएं अध्यापकों के प्रति लगाव नहीं रखेगीं तथा अध्ययन के प्रति रूचि कम हो जायेगी। विद्यालय का प्रथम काम है छात्राओं को सुखद, सम्पन्न और प्रेरक वातावरण प्रदान करना, ताकि उनके विद्यालय के कार्यो के प्रति अरूचि उत्पन्न न हो। इसके लिए विद्यालयों में विभिन्न गतिविधियों और शैक्षणिक शालाओं में नियमित कार्यक्रम आयोजित किये जाने चाहिए।

समुचित विकास और उपलब्धि के लिए स्वतन्त्रता पहली शर्त है। जहाँ छात्राओं पर अधिक नियंत्रण रहता है, वहाँ छात्राएं स्वतन्त्रता पूर्वक अपनी योग्यताओं की अभिव्यक्ति नहीं कर पाती इसीलिए विद्यालयों में छात्राओं को विभिन्न गतिविधियों के आयोजन और संचालन में प्रतिभागी होने की स्वतन्त्रता होनी चाहिए। जिससे स्वतः स्फूर्त अनुशासन की ओर अग्रसर हो सके, विद्यालयों, सामाजिक सांस्कृतिक और खेलकूद का केन्द्र होना चाहिए, जो सामान्यतः जीवन में अपनायी जाती है। विद्यालय का अध्ययन–अध्यापन केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित न रहकर छात्रों की सामाजिक वृत्ति को अभिव्यक्ति प्रदान करने में सहायक होना चाहिए। विद्यालय का वातावरण इस प्रकार का होना चाहिए कि वह बच्चों के विकास में सहायक सिद्ध हो सके।[17]

संदर्भ

1.एन.पी.शर्मा, (2005) 'खेल और समाज शास्त्र', के.एस. पब्लिशर्स, पेज नं. 55–56
2.बर्टिशकी (2001) उदधृत राजवीर सिंह, 'खेल समाज शास्त्र' स्पोर्टस पब्लिकेशन, नईदिल्ली पे.नं. 240
3.बर्टिशकी (2003), उदधृत राजवीर सिंह, 'खेल समाज शास्त्र' स्पोर्टस पब्लिकेशन, नईदिल्ली पेज नं. 141
4.राजवीर सिंह (2010) 'खेल समाज शास्त्र' स्पोर्टस पब्लिकेशन नईदिल्ली, पेज नं. 239 से 243
5.राजवीर सिंह (2010) 'खेल समाज शास्त्र' स्पोर्टस पब्लिकेशन नईदिल्ली, पेज नं. 243 से 246
6.शॉ (1985) fasting sistorid उदधृत राजवीर सिंह, 'खेल समाज शास्त्र' स्पोर्टस पब्लिकेशन, नईदिल्ली पेज नं. 248
7.मिलर ब्रीविंग, लॉय और रडमेन (2010) राजवीर सिंह, 'खेल समाज शास्त्र' स्पोर्टस पब्लिकेशन, नईदिल्ली पेज नं. 248
8.राजवीर सिंह (2010) 'खेल समाज शास्त्र' स्पोर्टस पब्लिकेशन नईदिल्ली, पेज नं. 246 से 250
9.हॉल (1996) उद्धृत राजवीर सिंह (2010) 'खेल और समाज शास्त्र' पब्लिकेशन नईदिल्ली पेज नं. 253
10.आशुतोष (2005) उदधृत राजवीर सिंह (2010) 'खेल औरसमाज शास्त्र' पब्लिकेशन नईदिल्ली, पेज नं. 256
11.राजवीर सिंह (2010) 'खेल और समाज स्पोर्टस' पब्लिकेशन नईदिल्ली, पेज नं. 254 से 255
12.हारग्रीव्सक्रॉसेट (1994–95) उदधृत राजवीर सिंह, 'खेल समाज शास्त्र' स्पोर्टस पब्लिकेशन, नईदिल्ली पे.नं. 259
13.राजवीर सिंह (2010) 'खेल और समाज' प्रकाशन नईदिल्ली, पेज नं. 258 से 259
14.राजवीर सिंह (2010) 'खेल और समाज' प्रकाशन नईदिल्ली, पेज नं. 276
15.राजवीर सिंह (2010) 'खेल और समाज' प्रकाशन नईदिल्ली, पेज नं. 277
16.राजवीर सिंह (2010) 'खेल और समाज' प्रकाशन नईदिल्ली, पेज नं. 282
17.उमराव सिंह (1998) एवं मिश्रा मदन मोहन चौधरी, 'पिछड़े बालकों की शिक्षा' म.प्र.हिन्दी ग्रन्थ, अकादमी भोपाल पेज नं. 40–39

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org